सामाजिक आन्दोलन : स्वरूप और विशेषताएँ

1. प्रस्तावना

समाज स्थिर नहीं है, बल्कि निरंतर परिवर्तनशील है। जब किसी वर्ग या समुदाय की आकांक्षाएँ, अधिकार या अपेक्षाएँ पूरी नहीं होतीं तो असंतोष जन्म लेता है। यही असंतोष सामूहिक रूप से संगठित होकर **सामाजिक आन्दोलन (Social Movement)** का रूप लेता है।
सामाजिक आन्दोलन केवल असंतोष का परिणाम नहीं, बल्कि समाज में परिवर्तन का एक माध्यम भी है।

---

2. सामाजिक आन्दोलन का स्वरूप (Nature of Social Movements)

- **सामूहिक क्रिया** – यह व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक क्रियाओं का संगठित रूप है।
- **असंतोष की अभिव्यक्ति** – समाज में अन्याय, असमानता और शोषण के विरुद्ध असंतोष से उत्पन्न।
- **लक्ष्य-उन्मुख** – आन्दोलन का हमेशा एक विशिष्ट उद्देश्य होता है (जैसे – स्वतंत्रता, अधिकार, सुधार)।
- **परिवर्तनकारी** – इसका प्रमुख स्वरूप सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक या सांस्कृतिक परिवर्तन लाना है।
- **दीर्घकालीन या अल्पकालीन** – कुछ आन्दोलन तात्कालिक होते हैं (जैसे किसी नीति के विरोध में), जबकि कुछ लम्बे समय तक चलते हैं (जैसे स्त्री आन्दोलन, पर्यावरण आन्दोलन)।
- **औपचारिक या अनौपचारिक** – आन्दोलन के संगठन औपचारिक संस्थाओं (संगठन, यूनियन) या अनौपचारिक नेटवर्क के माध्यम से संचालित हो सकते हैं।

---

3. सामाजिक आन्दोलन की विशेषताएँ (Characteristics of Social Movements)

1. **सामूहिकता** – आन्दोलन में व्यक्तियों की बजाय समूह या समुदाय की सक्रिय भागीदारी होती है।
2. **संगठित स्वरूप** – आन्दोलन में नेतृत्व, संगठन और कार्यनीति (Strategy) होती है।

3. **विचारधारात्मक आधार** – हर आन्दोलन किसी विचारधारा पर आधारित होता है, जैसे गांधीजी का सत्याग्रह अहिंसा पर आधारित था।
4. **संघर्ष और प्रतिरोध** – आन्दोलन प्रायः सत्ता या प्रभुत्वशाली वर्ग के विरुद्ध प्रतिरोध का रूप लेता है।
5. **परिवर्तन की आकांक्षा** – इसका अंतिम उद्देश्य समाज की संरचना या व्यवस्था में बदलाव लाना है।
6. **दीर्घकालिक प्रभाव** – आन्दोलन अक्सर सामाजिक चेतना और मूल्यों को बदल देता है, चाहे वह अपने तात्कालिक लक्ष्य में सफल हो या नहीं।
7. **नेतृत्व की भूमिका** – आन्दोलन में प्रभावी नेतृत्व (Leadership) दिशा और ऊर्जा प्रदान करता है।
8. **संसाधन संचय (Resource Mobilisation)** – सफल आन्दोलन के लिए वित्तीय, सामाजिक और राजनीतिक संसाधनों का होना आवश्यक है।
9. **सामाजिक एकजुटता** – आन्दोलन प्रतिभागियों में सामूहिक पहचान (Collective Identity) और एकजुटता का भाव उत्पन्न करता है।

---

4. समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोण

- **कार्ल मार्क्स** – सामाजिक आन्दोलन को *वर्ग संघर्ष* का परिणाम मानते हैं।
- **मैक्स वेबर** – आन्दोलन में *मूल्य और विचार* (Ideas and Values) की भूमिका को महत्त्व देते हैं।
- **एमिल दुर्खीम** – आन्दोलन को सामाजिक एकजुटता और नैतिक चेतना से जोड़ते हैं।
- **चार्ल्स टिली (Charles Tilly)** – आन्दोलन को राजनीतिक अवसर और संसाधन संचय से उत्पन्न बताते हैं।
- **नील स्मेल्सर (Neil Smelser)** – आन्दोलन तब उत्पन्न होता है जब संरचनात्मक तनाव, असंतोष और संसाधन उपलब्धता एक साथ मिलते हैं।

---

5. भारतीय परिप्रेक्ष्य में उदाहरण

- **स्वतंत्रता आन्दोलन** – औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध सामूहिक संघर्ष।
- **दलित आन्दोलन** – सामाजिक न्याय और समानता के लिए संघर्ष।
- **नारीवादी आन्दोलन** – महिलाओं की समानता और अधिकारों के लिए।
- **किसान आन्दोलन** – भूमि सुधार और न्यूनतम समर्थन मूल्य की माँग।
- **पर्यावरण आन्दोलन** – जैसे चिपको आन्दोलन, नर्मदा बचाओ आन्दोलन।

---

6. निष्कर्ष

सामाजिक आन्दोलन असमानता और अन्याय के विरुद्ध समाज की संगठित प्रतिक्रिया है। इसका स्वरूप संघर्षमूलक, परिवर्तनकारी और सामूहिक है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से आन्दोलन केवल सामाजिक समस्याओं का परिणाम नहीं बल्कि सामाजिक परिवर्तन का प्रेरक भी है।